SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

श्रीराम सीड्स प्रा॰ लि॰

272, नई धान मंडी, श्रीगंगानगर - 335001(राज.)

सरसों की फसल उत्पादन हेतु आवश्यक सुझाव

भूमि की तैयारी

हल्की दोमट मिट्टी राया/सरसों की खेती के लिए सबसे अच्छी होती है।
खेत को 2-3 बार जुताई करके सुहागा लगाकर तैयार करें।
असिंचित क्षेत्रों में खेत में नमी का विशेष ध्यान रखें।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

बुआई का समय

सरसों की बिजाई 30 सिंतबर से अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह तक करनी चाहिए। ज्यादा अगेती बिजाई करने पर अधिक तापमान की वजह से धोलिया नामक कीट फसल को नुकसान पहुंचा सकता है।

किस्में

स्थानीय जलवायु के अनुसार अच्छी किस्मों का चयन करें। भारत की लोकप्रिय किस्मों में **MUST-38** और **M2M-272** भी शामिल हैं।

बीज दर और उपचार

- **बीज दर** : 1.25 से 1.50 किलोग्राम प्रति एकड़ (अथवा 4-5 किलो प्रति हेक्टेयर)।
- **बीज उपचार** : बिजाई से पहले बीज को एक पैकेट एजोटीका तथा एक पैकेट फॉस्फोटीका से उपचारित करें।

बुआई का तरीका

बिजाई छिड़काव विधि से न करके लाईनों में करें। लाईन से लाईन का फासला 45 सें.मी. व पौधे से पौधे की दूरी 15 सें.मी. रखें। बीज 4-5 से.मी. से ज्यादा गहरा नहीं बोना चाहिए। बिजाई के तीन सप्ताह बाद फालतू पौधों को निकाल देना चाहिए।

SHRIRAM SEEDS PRIVATE LIMITED

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

- **देशी खाद** : 8-10 टन गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर बुआई से 15 दिन पहले डालें।

स्थिति/अवस्था	उर्वरक	मात्रा (प्रति एकड)	देने का समय / तरीका
असिंचित (बारानी क्षेत्र)	यूरिया	35 किग्रा	बिजाई के समय
	सिंगल सुपर फॉस्फेट (SSP)	50 किग्रा	बिजाई के समय
सिंचित क्षेत्र (बिजाई के समय)	सिंगल सुपर फॉस्फेट (SSP)	75 किग्रा	बिजाई के समय
	यूरिया	35 किग्रा	ड्रिल द्वारा
	म्यूरेट ऑफ पोटाश (MOP)	13 किग्रा	ड्रिल द्वारा
	जिंक सल्फेट	10 किग्रा	ड्रिल द्वारा
पहली सिंचाई के बाद	यूरिया	35 किग्रा	टॉप ड्रेसिंग
फॉस्फोरस/सल्फर विकल्प	SSP	—	DAP से बेहतर (12% सल्फर)
यदि DAP का प्रयोग करें	जिप्सम	100 किग्रा	अंतिम जुताई से पहले
	सल्फैक्स	500 किग्रा	35-45 दिन बाद, 100-125 लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें
जिंक की कमी पर	जिंक सल्फेट + यूरिया	500 किग्रा + 2.5 किग्रा	100 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

सिंचाई प्रबंधन

सरसों की फसल में पहली सिंचाई फूल आने पर करें,
दूसरी सिंचाई फलियाँ बनने के समय करें, ताकि दाने अच्छे भरें।
अगर पाला पड़ने का डर हो, तो फसल को बचाने के लिए हल्की सिंचाई कर
देना फायदेमंद रहता है। इससे ठंड का असर कम पड़ता है
और फसल सुरक्षित रहती है।

निराई-गुड़ाई एवं विरलीकरण

- **विरलीकरण :** बुआई के 15-20 दिन बाद यदि पौधे पास-पास हों, तो उन्हें उखाड़कर दूरी सही करें।
- **निराई-गुड़ाई :** पहली सिंचाई के बाद खरपतवार निकालने के लिए खुरपी का प्रयोग करें।

कीट नियंत्रण

15-30 दिन की फसल पर फेनवैलरेट डस्ट 0.4 % डी. पी. का 6 कि.ग्रा प्रति एकड़ भूरकाव करें । चितकबरा कीट (पेंटेड बग) के लिए क्लोरपाइरीफोस 20% ई.सी. 200 मिली लीटर 200-400 लीटर पानी प्रति एकड़ में घोलकर छिड़काव करें। चेपा या माहू (एफिड्स) के लिए 400 मि.ली. डाईमेथोएट (रोगोर) 30 ई.सी. या 70 मि.ली. इमिडाक्लोपरिड (कोन्फीडोर) प्रति एकड़ 150-200 लीटर पानी में मिलाकर 15-20 दिन के अन्तराल पर दो छिड़काव करें।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

रोग नियंत्रण

सफेद रतुआ एवं रोएदार फफूंदी के प्रभावी नियंत्रण के लिए मेटलैक्सिल एम 4% या मॅन्कोजेब 64% डब्ल्यू.पी. या रिडोमिल गोल्ड 1000 ग्रा. को 400 लीटर पानी प्रति एकड़ में घोलकर छिड़काव करें। तना गलन के लिए फसल चक्र अपनायें तथा कार्बेन्डेजिम 50% डब्ल्यू. पी. या बाविस्टीन 1000 ग्रा. को 400 लीटर पानी प्रति एकड़ में घोलकर छिडकाव करें।

सरसों में मरगोजा (Orobanchaceae) नामक खरपतवार को नियंत्रित करने के लिए गहरी जुताई, फसल चक्रण (चना/जौ लगाएं), नमी प्रबंधन (अधिक नमी से मरता है), और रासायनिक नियंत्रण (बुवाई के 25-30 दिन बाद ग्लाइफोसेट 25-30ml/acre) जैसे तरीके अपनाएं; सही समय पर दवा का छिड़काव करें और खेत में नमी बनाए रखें।

कटाई

जब फलियाँ पीली पड़ने लगें और दाने सख्त हो जाएँ, तब फसल की कटाई करें। कटाई में देर करने से दाने झड़ सकते हैं। अच्छी तरह सुखाकर ही सरसों का भंडारण करें ताकि नमी के कारण नुकसान न हो।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

टिप्पणी

इस पत्रक में दी गई फसल उत्पादन संबंधी सिफारिशें कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विशेषज्ञों, प्रगतिशील किसानों एवं सरकारी कृषि विशेषज्ञों के शोध एवं अनुभवों पर आधारित हैं। फसल अथवा किस्म का उत्पादन केवल बीज पर निर्भर नहीं करता, बल्कि भूमि की स्थिति, खाद-उर्वरक, सिंचाई, मौसम एवं अन्य कृषि कारकों पर भी निर्भर करता है। विभिन्न प्रदेशों एवं क्षेत्रों में परिणाम भिन्न हो सकते हैं। अतः कृषक स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार संबंधित कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों अथवा कृषि विशेषज्ञों की सलाह एवं स्वयं के अनुभव के आधार पर ही खेती संबंधी निर्णय लें।